B-4
L-11

ब्रिटिश काल में उद्योगों के पतन के कारण

- उद्योगों के पतन के कारण
- 18वीं सदी में उद्योग
- पतन के कारण
- आर्थिक

18वीं सदी मे उद्योग :

(i) शहरी उद्योग

- विलासिता (Luxury)
- कपड़ा उद्योग (सूती, रेशम)
- हथियार, आभूषण
- हाथी दाँत, मोती, कागज
- नौपरिवहन (तटवर्ती शहरो में)

चमड़े पर काम, बर्तन, लकड़ी

(ii) खरीददार → शासक वर्ग

व्यापारी, शहरी जनता

(iii) उत्पादन – हाथ से

ग्रामीण भारत

- कपड़ा, लकड़ी, चमड़े बर्तन।
- खरीददार - स्थानीय लोग
- उत्पादन – हाथ से

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

उद्योगों के पतन के कारण

ईस्ट इण्डिया कम्पनी - राष्ट्रीय शक्ति के रूप में उदय।

⇒ कम्पनी के राजनीतिक शक्ति के रूप में उदय एवं विस्तार से कुछ भारतीय उद्योगों का तात्कालिक तौर पर नुकसान हुआ।
जैसे - हथियार, विलासिता संबंधी चीजें।

⇒ अंग्रेजों को इन वस्तुओं की आवश्यकता नहीं थी वहीं भारतीय राज्य इन सभी वस्तुओं के खरीददार थे।

कारीगरों पर अत्याचार:

राजनीतिक शक्ति का दुरूपयोग करते हुए कंपनी ने विभिन्न प्रकार से कारीगरों पर दबाव बनाया जैसे- कम कीमत पर बेचने, कम मजदूरी पर कार्य करने के लिए बाध्य करना तथा प्रतिरोधियों को कार्य करने से रोकना इत्यादि।
निश्चित रूप से कारीगरों पर अत्याचार के कारण उत्पादन संबंधी कार्य प्रभावित हुए।

Note :-

1813 तक भारत में उद्योगों के पतन का यह महत्वपूर्ण कारण था हालाँकि अभी भी कंपनी कपड़ो सहित कुछ भारतीय वस्तुओं का निर्यात कर रही थी इसलिए इन उद्योगों का महत्व बना रहा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

ब्रिटिश औद्योगिक क्रान्ति से भारत संबंधी नीतियों में परिवर्तन हुआ। भारत को बाजार एवं कच्चे माल के स्त्रोत की योजना के रूप में स्थापित किया गया। इससे भारतीय उद्योगों को अधिक नुकसान हुआ। 1813 से 1860 के बीच भारतीय उद्योगों को सर्वाधिक नुकसान हुआ।

मुक्त व्यापार की नीति :

•1813 में न केवल भारत के सन्दर्भ में कंपनी के एकाधिकार समाप्त कर दिया गया बल्कि मुक्त व्यापार की नीति लागू की गई अर्थात सीमा शुल्क रहित एवं कम सीमा शुल्क पर ब्रिटिश वस्तुओं को भारतीय बाजारों में आने की अनुमति दे दी गयी। इससे भारतीय उत्पाद प्रतियोगिता मे पिछड़ गए।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

एकतरफा मुक्त व्यापार :

एक तरफ सीमा शुल्क हटा कर भारतीय बाजारों में भारतीय वस्तुओं को विस्थापित किया गया वहीं दूसरी तरफ ब्रिटेन में भारतीय वस्तुओं पर सीमा शुल्क बढ़ा कर ब्रिटिश बाजारों से भी भारतीय वस्तुओं को वंचित रखा गया।

अंतर देशीय सीमा शुल्क :

राजनैतिक अधिकारों का कंपनी ने दुरूपयोग करते हुए भारतीय उद्योगों को नुकसान पहुँचाने और ब्रिटिश वस्तुओं के बाजार का विस्तार करने के

लिए अन्तर्देशीय सीमा शुल्क का उपयोग हथियार के रूप मे किया।

ब्रिटिश बाजारों से खरीद:

ब्रिटिश भारतीय सरकार पर यह दबाव बनाया गया कि सरकार के द्वारा आवश्यक वस्तुओं की खरीद ब्रिटेन से की जाए।
जैसे- सैनिकों के साजो-सामान, हथियार, कागज इत्यादि इत्यादि प्राथमिकता के आधार पर ब्रिटेन से खरीदी गई।
यहाँ तक नौ परिवहन के लिए भी ब्रिटिश जहाजों को प्राथमिकता दी गई।

कच्चे मालों का निर्यात:

1813 के पश्चात इस प्रकार की परिस्थितियाँ निर्मित की गई, जिससे भारत से कच्चे मालों का निर्यात बढ़ा जैसे कपास, रेशम, नील इत्यादि। निर्यात बढ़ने के कारण भारत में इनकी कीमतें बढ़ी और इससे भारतीय उत्पादों की लागत भी बढ़ी।

Note:

19वीं सदी के मध्य तक उपरोक्त कारणों से भारतीय उद्योगों को अधिक नुकसान हुआ हालाँकि अभी तक मुख्य रूप से शहरी उद्योगों का पतन हुआ था।

रेलवे की भूमिका :

भारत में रेलवे के आगमन के पश्चात न केवल शहरों में ब्रिटिश वस्तुओं का निर्यात बढ़ा बल्कि ग्रामीण भारत में भी ब्रिटिश वस्तुएँ पहुँचने लगी इससे ग्रामीण उद्योगों को भी नुकसान हुआ।

Note :

1947 तक किसी न किसी रूप में भारतीय उद्योगों में गिरावट के तत्व को देख सकते हैं हालाँकि सभी उद्योगों का पतन नहीं हुआ बल्कि जातिगत रूझान, महाजनों का दबाव तथा सभी स्थानों पर ब्रिटिश वस्तुओं की पहुँच संभव नहीं थी और कुछ ऐसे लोग भी थे जिनका भारतीय उत्पादों से जुड़ाव था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

उद्योगों के पतन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव :

19वीं सदी के पूर्वार्द्ध में एक तरफ तेजी से उद्योगों का पतन हुआ वहीं ब्रिटेन की तरह आधुनिक उद्योगों का विकास नहीं हुआ अर्थात जो औद्योगिक ढाँचा था वह नष्ट हुआ और वैकल्पिक ढाँचा निर्मित नहीं हो पाया, विनिर्माण के क्षेत्र में हम से पिछड़ गए और आज भी औद्योगिक पिछड़ेपन को महत्वपूर्ण कारण माना जाता है।

- कई शहरों की पहचान औद्योगिक उत्पादों को लेकर थी और कई शहरो में अलग से औद्योगिक क्षेत्र भी होते थे उद्योगों के पतन का कारण औद्योगिक शहरो एवं उन क्षेत्रो का भी पतन हुआ जैसे- सूरत, ढाका मुर्शिदाबाद इत्यादि।
- वैकल्पिक रोजगार के साधन शहरो में उपलब्ध नही थे इससे बेरोजगारों की संख्या बढ़ी।
- इस जनसंख्या का दबाव कृषि पर पड़ा इससे खेती योग्य भूमि का विभाजन हुआ और उत्पादकता कम हुई।
- कृषि पर जनसंख्या का बोझ अधिक होने के कारण (सस्तालम) भूमि मालिकों ने तकनीकों की उपेक्षा की या आधुनिकीकरण को महत्व नही दिया।
- ग्रामीण उद्योगों के पतन से उन भूमिहीन श्रमिकों को आर्थिक रूप से नुकसान हुआ। थोड़े समय के लिए कपड़ा एवं अन्य उद्योगों मे कार्यरत थे।
- उद्योगों के पतन के कारण व्यापार की प्रकृति भी प्रभावित हुई। भारत तैयार मालों के निर्यातक के रूप मे जाना जाता था अब कच्चे मालों के आयातक के रूप मे भी जाना जाने लगा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR